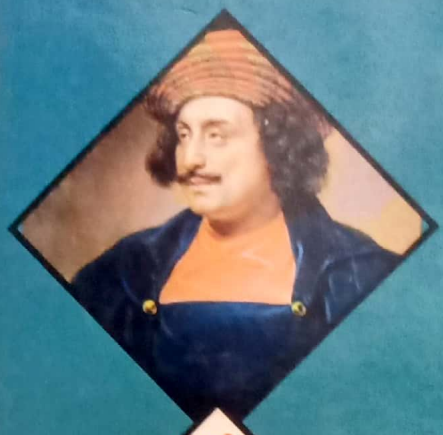

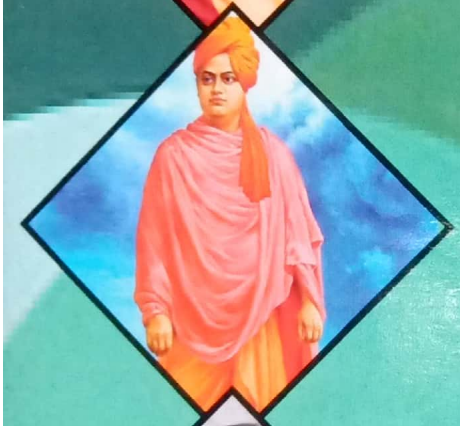

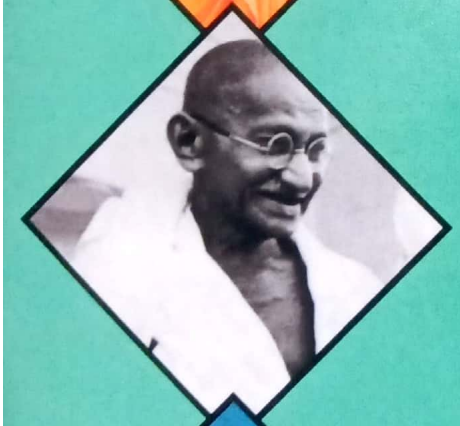

आधुनिक भारतीय चिंतन

डॉ. रामकिशन वसंतराव लोमटे

Scanned with CamScanner

ISBN : 978-93-91119-86-7

मूल्य : आठ सौ रुपये मात्र

पुस्तक	:	**आधुनिक भारतीय चिंतन**
सम्पादक	:	डॉ. रामकिशन वसंतराव लोमटे
©	:	सम्पादक
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस** 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**प्रथम, 2022**
मूल्य	:	800.00
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

Scanned with CamScanner

15. महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा तत्व : सृष्टि के वरदान
डॉ. तात्या बाळाकिसन पुरी 98
16. गांधीवाद
कृपादेवी आनंदराव पाटील 102
17. आज के परिपेक्ष्य में गांधी विचारों की प्रासंगिकता
प्रेम चव्हाण 109
18. सरदार वल्लभभाई पटेल और राष्ट्रीय एकता
प्रा. महेश शामराव दाडगे 114
19. भारत की अखंडता के लिए बलिदान – डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी
डॉ. संदिप जगन्नाथ जगताप 118
20. जवाहरलाल नेहरू और लोकतंत्र
डॉ. हनुमंत फाटक 123
21. भारतीय राजनीति में पंडित जवाहरलाल नेहरू का योगदान
डॉ. एस. डी. पोटभरे 128
22. जवाहरलाल नेहरू के लोकतंत्रवादी विचार
बालाजी भाऊसाहेब दळवे 134
23. डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की न्याय की अवधारणा
प्राचार्य डॉ. घुमरे एल.बी. 140
24. एम.एन. रॉय और लोकतांत्रिक क्रांति
डॉ. हनुमंत फाटक 145
25. जयप्रकाश नारायण का राजनीतिक चिंतन
बाबासाहेब छबुराव लहाने 155
26. डॉ. राममनोहर लोहिया : विचारों का परिचय...
प्रा. विजय संभाजी संबेटवाड, डॉ. प्रभाकर रघुनाथ जगताप 159
27. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद
डॉ. सुनिल पिंपळे 168
28. पंडित दीनदयाल उपाध्याय की अर्थनीती
डॉ. पांडुरंग मारोतराव कल्याणकर 173
29. भारतीय बीज उद्योग के जनक पद्मभूषण डॉ. श्री बद्रीनारायण बारवाले
डॉ. महेश भाऊसाहेब थोरात 183

Scanned with CamScanner

24

एम.एन. रॉय और लोकतांत्रिक क्रांति

डॉ. हनुमंत फाटक

राय के अनुसार अंत क्रांति नहीं स्वतंत्रता है। क्रांति के किसी भी सिध्दांत, जो स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करता है, को खरिज कर दिया जाना चाहिए। राय ने क्रांति का एक सिध्दांत देने का दावा किया, जो अधिकतम स्वतंत्रा प्राप्त करता है। मनुष्य में स्वतंत्रता के लिए एक सहज इच्छा होती है। संभावित रूप से और स्वभाव से वह तर्कसंगत और नैतिक है। क्रांति का सिध्दांत मानव स्वभाव की इसी अवधारणा पर आधारित होना चाहिए। क्रांति लाने के लिए, जो किया जाना है वह हिंसा या विद्रोह या किसी अन्य माध्यम से राज्य की सत्ता पर कब्जा नहीं है। इससे वांछित अंत नहीं होगा। मनुष्य की स्वतत्रता की ललक को ही जगाना है, ये मुश्किल नहीं है।

मनुष्य स्वभाव से तर्कसंगत और शिक्षित है। रॉय के क्रांति के सिध्दांत के बारे में लिखते हुए जी.डी. पारिख ने लिखा, मनुष्य की शिक्षा योग्यता में विश्वास के लिए एक ठोस नींव की स्थापना, यह सामाजिक पुनर्निर्माण के सभी प्रयासों के शुरुआती बिंदु के रूप में उनकी बौद्धिक और नैतिक मुक्ति पर जोर देती है। शिक्षा और अनुमान का लंबा और कठिन रास्ता अपनाता है जो अकेले स्वतंत्रता का मार्ग है। विकास की ऐतिहासिक और प्राकृतिक प्रक्रिया को सामाजिक इंजीनियरिंग के चतुर उपकरणों से छोटा नहीं किया जा सकता है, वास्तविकता के विरूंपण और स्वतंत्रता के संक्षिप्तीकरण के बिना .... दार्शनिक पुनर्जागरण–किसी भी वास्तविक रूप से मुक्त सामाजिक आंदोलन के लिए पहली आवश्यकता है। रॉय ने दावा किया कि यह स्थिति सही है ऐतिहासिक और ताक्रिक दोनों रूप से।

इतिहास के दौरान, रॉय ने लिखा, आध्यात्मिक विद्रोह हमेशा महान सामाजिक परिवर्तनों से पहले रहे है।राजनीतिक या आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के किसी भी प्रयास के लिए मानसिक स्वतंत्रता अनिवार्य रूप से पूर्व शर्त रही है। आधूनिक युग शुरु हुआ, रॉय ने कहा, साथ पुनर्जागरण जो भगवान के खिलाफ मनुष्य का विद्रोह था। तार्किक के आधार पर रॉय ने यह दिखाने की

Scanned with CamScanner

कोशिश की दार्शनिक क्रांति किसी भी महत्वपूर्ण सामाजिक या संस्थागत परिवर्तन की पूर्व शर्त है। रॉय ने तर्क दिया कि नैतिक पुरुषों के बिना कोई नैतिक समाज नहीं हो सकता है। अब तक एक नए समाज के सभी वास्तुकारों और इंजीनियरों ने व्यवस्था को उलट दिया है। एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए इसलिए मनुष्य को शिक्षित करके शुरु करना होगा। रॉय के अनुसार, आप पहले समाज को अच्छा नहीं बना सकते; समाज क्या है लेकिन पुरुष जो इसे बनाते हैं और एक समाज अच्छा या बुरा होता है क्योंकि पुरुष अच्छे या बुरे होते हैं।

इसके अलावा रॉय ने सोचा कि वर्तमान संकट के शिकार, हालांकि सभी संकट व्याप्त हैं। इसके बारे में सबसे कम जागरुक है। इसलिए संकट (दार्शनिक क्रांति) के बारे में व्यापक जागरूकता पैदा करना पहली बात है। "क्योंकि क्रांति हमेशा दार्शनिक क्रांति से पहले होती है और नए दर्शन प्रतिभाशाली लोगों द्वारा बनाए जाते हैं, यह वही हैं जो वास्तव में क्रांति की शुरुआत करते हैं। रॉय ने लिखा, प्रतिभाशाली व्यक्तियों द्वारा कल्पना किए गए आइकोक्लास्टिक विचारों द्वारा क्रांतियों की शुरुआत की जाती है। विचारों के रोमांच से आकर्षित पुरुषों का एक भाईचारा, स्वतंत्रता के आग्रह के प्रति सचेत, स्वतंत्र पुरुषों के एक स्वतंत्र समाज की दृष्टि से प्रेरित दुनिया का रीमेक बनाने की इच्छाशक्ति.... समकालीन संकट से निकलने का रास्ता दिखाएगी....।

रॉय के क्रांति के नए सिध्दांत के अनुसार एक क्रांतिकारी की अवधारणा पूरी तरह से बदल गई है। उसका काम अब लोगों को शिक्षित करने तक ही सीमित रहेगा। रॉय ने लिखा आवश्यक संस्थानों के निर्माण के लिए आग्रह और पहल को विकसित करने के लिए शिक्षकों का एक संवर्ग होना चाहिए। जिनके पास लोकतांत्रिक परंपराएं, एक प्रगतिशील दृष्टिकोण और तर्कसंगत सोच की क्षमता हो।

इस प्रकार क्रांति का तात्कालिक उद्देश्य संस्थाओं को बदलना नहीं है, बल्कि लोगों को अच्छे और फिट होने के बाद संस्थानों को बदलने के लिए शिक्षित करना है। रॉय की क्रांति की योजना इस नए दृष्टिकोण का सुझाव देती है। अब तक रॉय ने लिखा, ऐसी संस्थाएँ बनाने का प्रयास किया गया हैं जो पुरुषों को शिक्षित करती हैं, जो मनुष्य के लिए अच्छे होने की स्थिति पैदा करती हैं–लेकिन नए मानवतावाद का दृष्टिकोण व्यक्ति से शुरू होता है, यह कहता है कि केवल नैतिक पुरुष ही गठन कर सकते हैं एक तर्कसंगत समाज।

उनकी क्रांति की योजना में पहली बात यह है कि संस्थाओं को बदलने के लिए राज्य सत्ता पर कब्जा नहीं है, बल्कि पुरुषों को बदलने के लिए एक

Scanned with CamScanner

दार्शनिक क्रांति है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो रॉय ने अपने ऊपर लिया, वह था राजनीति को नैतिक बनाना। रॉय ने लिखा, सार्वजनिक जीवन में नैतिकता एक राजनीतिक सिध्दांत को मानती है, जो किसी भी आवश्यक सामाजिक परिवर्तन के लिए सत्ता पर कब्जा नहीं करता है; और नए राजनीतिक सिध्दांत को एक सामाजिक दर्शन निकाला जाना चाहिए। जो मनुष्य को प्रधानता के स्थान पर पुनर्स्थापित करता है।

रॉय सत्ता और संप्रभुता की राजनीति के विरोधी हैं। सत्ता की राजनीति खराब है। यह राजनीति के नैतिकता को रोकता है। भंवर में पकड़े जाने पर, सबसे अच्छे पुरुषों को भी सबसे कम गहराई तक खींच लिया जाना चाहिए। रॉय ने अपने अनुयायियों को सलाह दी कि जब वे कर सकते हैं, तब भी सत्ता पर कब्ज़ा न करें। सत्ता भ्रष्ट करती हैं सत्ता में आने वालों को बदलने की कोशिश मत करो, रॉय ने कहा। संभावित रूप से एक आदमी दूसरे की तरह अच्छा है। सत्ता में बैठे व्यक्ति, मुझे सत्ता में बने रहने की चिंता हैं। सत्ता में पुरुषों की तर्कसंगतता और नैतिक भावना के लिए अपील करने के लिए, राजनीति को शुध्द करने का एकमात्र साधन है।

लेकिन रॉय इस बात से संतुष्ट नहीं हैं कि उनके अनुयायी केवल नैतिकता का उपदेश दें। उन्हें इसका अभ्यास करना चाहिए। रॉय ने लिखा है, अनादि काल से असंख्य नैतिकतावादी रहे हैं। उन्होंने उच्च आदर्शो का उपदेश दिया है, जिनका कभी पालन नहीं किया गया। सार्वजनिक जीवन में नैतिकता का परिचय देने के लिए कुछ लोगों को उन विचारों का अभ्यास शुरू करना चाहिए। जिनका वे प्रचार करेंगे। आधुनिक दुनिया एक पागलखाने की तरह दिखती है। बेवजह चल रहे भावनाओं के तूफान में तर्क की अपील खो जाती है। इसलिए उपदेश देना व्यर्थ है। लेकिन पुरुषों का एक समूह जो तर्कसंगत और नैतिक रूप से जीएगा, चमत्कार करेगा, और उदाहरण अनूठा संक्रमण बन जाएगा।

रॉय ने सुझााव दिया कि बहुत से व्यक्ति जो तर्कसंगत और नैतिक प्राणियों के साथ दुनिया को आबाद करने की आवश्यकता महसूस करते है, वे स्वयं नैतिक और तर्कसंगत व्यक्ति बनना शुरू कर देंगे। स्वाभाविक रूप से जब उनमें से सौ इस पथ पर यात्रा कर रहे होंगे और एक ही आदर्श द्वारा निर्देशित होंगे और एक ही अभ्यास में लगे होंगे, तो उनके बीच सहयोग होगा। मानवतावादी आंदोलन विकसित होगा। वे एक बेहतर समाज के दूर आदर्श का पीछा नहीं करेंगे, लेकिन वे नए मानवतावाद की कल्पना करने वाले तर्कसंगत और नैतिक समाज के प्रतीक का निर्माण और निर्माण करेंगे। रॉय ने हमें इस

Scanned with CamScanner

क्रांति का सूक्ष्म विवरण नहीं दिया, लेकिन व्यापक संकेतों के आधार पर कि उन्होंने कट्टरपंथी मानवतावादियों को दिया, रूपरेखा तैयार की है।

रॉय की सामाजिक पुनर्निर्माण की पध्दति को तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है। इसे एक दार्शनिक क्रांति के रूप में शुरु करना है: इसलिए, एक विचारधारा का निर्माण पहला काम है। दूसरा कार्य वास्तविक दार्शनिक क्रांति है जो उस विचारधारा का प्रचार–प्रसार है। अंत में हालांकि, सामाजिक–राजनीतिक और आर्थिक पुनर्निर्माण का पालन करना है।

जहाँ तक पहली विचाराधारा का निरूपण है, कार्य कमोबेश रॉय द्वारा किया गया है, यह आमतौर पर उनके अनुयायियों द्वारा माना जाता है। राय के दर्शन द्वारा प्रचार की विधि पहले ही तय की जा चुकी है। किसी विचारधारा के प्रचार–प्रसार की दो विधियाँ हो सकती हैं। एक मौजूदा विचारधारा पर ललाट हमला है। इसका परिणाम दो प्रतिद्वंद्वी शिविरों की स्थापना में होता है जो कटुता और घृणा पैदा करते हैं जिससे हिंसक झड़पें होती हैं। फिर भी, यह निश्चित नहीं है कि यथास्थिति की ताकतों की जीत नहीं होगी। यह एक बेकार हालांकि आसान प्रक्रिया है, जिसमें जो भी जीतता है, एसकी स्वतंत्रता और समृध्दि हमेशा पीड़ित होती है। उन्मादी और उन्मादी दिमागों की नींव पर सुंदरता नहीं बनाई जा सकती। दूसरी विधि अनुनय की है– सामाजिक परिवर्तन की कठिन तकनीक के माध्यम से लोकतांत्रिक। अनुनय–विनय की इस प्रक्रिया में बहुत सुविधा होती है यदि विचारक इस बात पर जोर नहीं देता कि दूसरा पक्ष उसके सभी पुराने विचारों को गलत मानकर खारिज कर देता है और सभी नए विचारों को सही मान लेता है।

क्योंकि तकनीक कठीन है, इस कार्य के लिए सक्षम प्रचारकों की आवश्यकता है। ये प्रचारक उन लोगों सहित अध्ययन क्लब शरु करेंगे जो सभी विचारों को साझा नहीं कर सकते हैं। इसका उद्देश्य इलाके में एक लोकतांत्रिक माहौल बनाना है। अध्ययन क्लब मौलिक और वर्तमान समस्याओं पर चर्चा करेंगे। आयोजकों को अपने सदस्यों पर निष्कर्ष नहीं थोपना चाहिए बल्कि समाधान विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। उनका मुख्य कार्य जनता को शिक्षा प्रदान करना है जो एक लोकतांत्रिक दृष्टिकोण को जगाने वाला है। रॉय ने इन माननवतावादी समूहों के महत्व पर बहुत जोर दिया। उन्होंने लिखा, मानवतावादी दृष्टिकोण यह है कि लोकतंत्र और स्वतंत्रता के इन छोटे द्वीपों को बनाकर हम उस समाज का केंद्र बना रहे हैं, जिसे हम स्थापित करना चाहते हैं, जिस तरह का समाज हम रहना चाहते हैं।

Scanned with CamScanner

मानवतावादी मानते हैं कि उदाहरण उपदेश से बेहतर है और इन छोटे समूहों को बनाकर हम समग्र रूप से समाज का निर्माण कर रहे हैं। धीरे–धीरे इन अध्ययन क्लबों का महत्व और संख्या में वृध्दि होगी। सदस्यों में सहकारिता की भावना का विकास होगा। वे स्थानीय समस्याओं का समाधान शुरु करेंगे। यह उतना मुश्किल नहीं जितना लगता हैं। हालांकि बहुत महत्वपूर्ण है। रॉय ने कहा। आखिरकार एक छोटी सी जगह में लोग अपने खुद के स्कूल, अपने उत्पादक और उपभोक्ता सहकारी समितियों को संगठित कर सकते है; वे कुएं खोदने, सड़क बनाने, सार्वजनिक स्वच्छता में सुधार करने आदि में पहल कर सकते हैं, वे इसे यहां और अभी कर सकते हैं, प्रतीक्षा किए बिना, या तो सरकार के करने के लिए, या क्रांति होने के लिए। यदि उनकी लोकतांत्रिक स्थानीय इकाइयों में स्वयं इन चीजों को करना शुरु कर देंगे, तो उन्हें पता चलेगा कि उन्होंने स्वयं क्रांतियां बनाई है।

इस प्रकार अध्ययन क्लब राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर चर्चा करते हुए स्थानीय समितियों में परिवर्तित हो जाते हैं। चुनाव के दौरान यह अपने स्वयं के उम्मीदवारों को इसके लिए जिम्मेदार विधायिका में भेजेगा। इस प्रकार संसदीय लोकतंत्र धीरे–धीरे और शांतिपूर्वक कट्टरपंथी लोकतंत्र में परिवर्तित हो सकता है और पार्टी सरकार लोगों की सरकार में बदल सकती है। इसी तरह स्थानीय सहकारी समितियां बनेंगी और वे नई सामाजिक व्यवस्था कि आर्थिक नींव बन जाएंगी।

यह दावा किया जाता है कि क्रांति की यह तकनीक, नई सामाजिक व्यवस्था के उदय की पूर्व शर्त के रूप में, पहले वर्तमान शासन का पूर्ण विनाश नहीं दर्शाती है। इस तरह का विनाश एक अव्यवस्था लाता है और हमारे सिद्धांतों के बिल्कुल विपरीत एक सामाजिक पैटर्न के उद्‌भव का कारण बन सकता है। इसलिए यह क्रमिकतावाद और पुराने के धीमे प्रतिस्थापन के लिए नए के लिए खड़ा है। विधि शांतिपूर्ण और अहिंसक बनी हुई है। यह तर्क दिया जाता है कि सरकार संसदीय होने के कारण क्रांति की इस तकनीक को विकसित करने में बाधा नहीं बनेगी; दूसरी और निहित स्वार्थ 'खूद को अलग–थलग पांएगे या वे खुद को लोगों के साथ मिला लेंगे।' इसके अलावा यदि हम बुराई और स्वतंत्रता के स्थापित क्रम के बीच में कुछ अच्छा बनाना जारी रखते हैं, तो वह अच्छा अंततः एक नई दुनिया के निर्माण में चला जाएगा जिसमें पुरानी दुनिया की सभी अच्छी चीजें शामिल होंगी और अच्छाई जो कि हम जोड़ना चाहते हैं, और पुरानी व्यवस्था की बहुत सी बुरी चीजें खाली गोले की तरह गिरेंगी।

Scanned with CamScanner

रॉय ने अपनी योजना को "शेखचिल्ली की कहानी" नहीं माना। वह इसे लेकर गंभीर हैं। उन आलोचकों के लिए, जो कहते हैं कि ऐसा करना संभव नहीं है। रॉय ने उत्तर दिया. क्या ऐसा करना संभव नहीं है? संभावना पर संदेह करना अपरिहार्य हिंसक क्रांतियों के उस प्रलयकारी सिद्धांत की और ले जाता है। इसका मतलब है कि आप छोटे काम नहीं कर सकते, लेकिन आप बड़े काम करना चाहते हैं। लेकिन क्या होगा अगर आप बड़े काम नहीं कर सकते? इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि आप शिक्षा, ज्ञान का प्रसार नहीं कर सकते हैं, और आप लोगों को स्वतंत्रता और आत्मविश्वास के लिए प्रेरित नहीं कर सकते हैं, लेकिन आप एक शक्तिशाली राज्य के किले में जा सकते हैं और उसके स्थान पर अपना राज्य बना सकते हैं। यह एक जुनून है, वीरता का भ्रम है, जो पागलपन और गैरबराबरी की और ले जाता है।

रॉय ने क्रांति के अपने तरीकों और तकनीक के उन आलोचकों को भी जवाब दिया। जो कहते हैं कि इस पध्दति से एक नई सामाजिक व्यवस्था को जन्म देने से पहले यह एक अकल्पनीय रूप से लंबी प्रकिया होगी। रॉय इस बात से सहमत नहीं थे कि इसमें निश्चित रूप से एक लंबा समय लगेगा, लेकिन अगर ऐसा होता भी है, तो रॉय के पास होगा। उन्होंने कहा, "यह मानते हुए कि इसमें बहुत लंबा समय लगेगा, क्या कोई विकल्प है?.. जिस तरह का सामाजिक परिवर्तन हम लाना चाहते हैं, अर्थात् समाज के व्यक्तिगत घटकों के लिए अधिक स्वतंत्रता?... जो लोग बढ़ती हुई रेजिमेंट और व्यक्ति के ग्रहण के प्रति समय के संकेतों से भयभीत हैं, उनके पास और कोई विकल्प नहीं है...

मूल्यांकन– रॉय का क्रांति का सिध्दांत कुछ मान्यताओं पर आधारित है, जिनकी हम पहले के अध्यायों में जांच कर चुके हैं और उन्हें कम पाया गया है। तर्क संगतता, नैतिकता और स्वतंत्रता सामाजिक श्रेणियां हैं लेकिन रॉय उन्हें मानव–पूर्व जैविक विरासत के रूप में मानते है। अपने यंत्रवादी रवैये के कारण वह उस गुणात्मक परिवर्तन को देखने से इनकार करता है जो एक जैविक जानवर के सामाजिक जानवर बनने पर होता है। दो हजार साल पहले अरस्तू द्वारा खोजा और व्यक्त किया गया सरल सत्य, रॉय द्वारा पूरी तरह से खारिज कर दिया गया है। मेरा मतलब अरस्तू की प्रसिध्द उक्ति से है: मनुष्य एक राजनीतिक (सामाजिक) जानवर है। "कोई मनुष्य को उसके राजनीतिक (सामाजिक) और उसके पशु स्वभाव दोनों को ध्यान में रखें बिना नहीं समझ सकता।" 'जैविक विरासत और भौतिक वातावरण पौधों और जानवरों की व्याख्या कर सकते हैं, लेकिन मनुष्य को नहीं। मनुष्य की प्रकृति (जैविक रूप से) में कुछ विशेषताएं हैं, जिनमें से प्रत्येक सामाजिक वातावरण के आधार पर

Scanned with CamScanner

कई दिशाओं में जाने में सक्षम है। अतः सामाजिक परिवेश के प्रकार को ध्यान में रखे बिना मानव स्वभाव की बात करना एक अमूर्तता है। यह कहना कि मनुष्य स्वभाव से तर्कसंगत है। आदि, एक नया हठधर्मिता है। रॉय का क्रांति का सिध्दांत इन परिसरों से एक तार्किक कटौती है। यदि झूठ को स्व–स्पष्ट के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है। तो क्रांति का एक सिध्दांत गिर जाता हैं।

रॉय के अलावा अठारहवीं शताब्दी का अनुकरण करते हुए, हठधर्मिता के साथ मनुष्य के अपने भाग्य का निर्माण होने की निश्चितता पर जोर देता हैं। सबाइन लिखती हैं, '... अठारहवीं शताब्दी के लोकप्रिय विचार ने एक दर्शन को दोहराया (वह)... इस आशा को बढ़ावा दिया कि बुध्दि (मनुष्य की तक्रसंगतता) पुरुषों को उनके सामाजिक और राजनीतिक भाग्य का औसत दर्जे का स्वामी बना सकती है। इसने स्वतंत्रता के आदर्श का उत्साहपूर्वक बचाव किया.... रॉय क्रांति के अपने सिध्दांत में इस विश्वास का एक बुत बनाता है। इतिहास और अनुभववाद के लिए रॉय की स्पष्ट चिंता के बावजूद, राय के पुरे दर्शन में तक्रवाद और निगमनात्मक तरीके प्रबल होते हैं, जो उनके सिध्दांत में परिणत होता है। क्रांति। यहां, फिर से, अठारहवीं शताब्दी के तर्कवाद के लिए सबाइन जो लिखता है वह रॉय के लिए सच है। फिर भी इस अनुभवाद में तर्कवाद के सभी पूर्वाग्रह थे। इसमें सर्वज्ञता की कुशाग्रता और सरलता की खुली थी। इसने तथ्यों की अपील की लेकिन इस पर जोर दिया कि तथ्यों को एक पूर्व निर्धारित भाषा बोलनी चाहिए। और यही कारण है कि इतिहास और तथ्यों के वैज्ञानिक अध्ययन पर उनके पूरे जोर के साथ रॉय का दर्शन चाहता है कि हम उस व्यक्ति पर अपने तर्क और बुध्दि से विश्वास करें और केवल अनुनय द्वारा, तर्कसंगत रूप से काटे गए एक आदर्श समाज का निर्माण कर सकते है।

यह बताता है कि रॉय जो सुझाव देते हैं वह किसी भी वास्तविक समाज में संभव नहीं है, जो वास्तव में सीधे व्यक्तियों से नहीं बना है बल्कि समूह–हितों और संघों को जोड़ने और संघर्ष करने का एक जटिल नेटवर्क है। रॉय, इसे अनदेखा करते हुए, केवल समाज और व्यक्तियों को देखते हैं और एक बच्चे की तरह से संस्थाओं और पुरुषों की तार्किक रूप से गढ़ी गई अवधारणा पर आधारित समाज का तर्कसंगत पुनर्निर्माण मददगार नहीं है। इन समूहों, संरेखण और संघर्षों को भूलकर, जो बड़े पैमाने पर सामाजिक गतिशीलता को निर्धारित करते है, रॉय का जोर मानवीय भावना पर है, उनकी प्रकृति सभी सामाजिक प्रगति के वसंत के रूप में है।

Scanned with CamScanner

अपनी कटौती और तर्कवाद से प्रभावित होकर रॉय इतिहास के अध्ययन से मनमाना निष्कर्ष निकालते हैं, जहाँ वह यह दावा करते हैं कि "सभी क्रांतियां और महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन दार्शनिक क्रांतियों से पहले होते हैं। वह आधुनिक युग के अग्रदूत के रूप में पुनर्जागरण का उदाहरण देते हैं, जो पूरी तरह से उन सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों की अवहेलना करते हैं जो स्वयं पुनर्जागरण को प्रेरित करते हैं। बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि आप इतिहास की धारा को किस बिंदु पर पकड़ते हैं। रॉय जिस बिंदु पर पहले अपनी ऊँगली रखते हैं, वह मनमाना और अवैज्ञानिक है और इस पर आधारित क्रांति का सिध्दांत संतोषजनक नहीं है।

और फिर अगर हम रॉय से सहमत नहीं हैं कि मनुष्य अपने में कुछ निश्चित तत्वों से संपन्न है, चाहे वह किसी भी वातावरण (विशेषकर सामाजिक) के साथ हो, और यह मानते हैं कि मनुष्य का सार कुछ प्राकृतिक प्रवृत्तियों में निहित है, जो अलग–अलग सामाजिक वातावरण में अलग–अलग विकसित होते हैं, हमें अच्छे सामाजिक संस्थानों के निर्माण की पूर्व शर्त के रूप में पहले मनुष्य को अच्छा बनाने के लिए रॉय की धारणा को त्यागना होगा। मनुष्य को अच्छा बनाने के लिए जिसका अर्थ है मनुष्य की प्रवृत्तियों का वांछित अभिविन्यास, हमें मनुष्य और सामाजिक संस्थाओं के संबंधों के नियमों का अध्ययन करना होगा, और अपने ज्ञान को सामाजिक वातावरण को बदलने के लिए पहले लागू करना होगा, ताकि गुड मेट, रॉय के मानवतावादी उत्साह ने मेज को उल्टा कर दिया।

यह मानने में अन्य तार्किक कठिनाइयाँ हैं कि नैतिक मनुष्य के बिना कोई नैतिक समाज नहीं हो सकता। आइए मान लें कि यह प्रस्ताव सही है। अब रॉय नैतिकता को अंतःकरण से जोड़ते हैं। यहाँ रॉय को दो और धारणाओं का उपयोग करना है जो वैज्ञानिक रूप से अस्थिर हैं। नंबर एक कि हर आदमी का विवके सच बोलता है और नंबर दो कि हर आदमी वही करेगा जो उसका विवेक बोलेगा। जैसा कि पहले ही देखा जा चुका है, ये दोनों धारणाएँ बिना किसी गारंटी के हैं। रॉय का सिध्दांत इस साधारण तथ्य को ध्यान में नहीं रखता है कि विवके लोचदार है और इसका आकार और सामग्री काफी हद तक सामाजिक वातावरण पर निर्भर करती है। न ही वह इस बात पर विचार करता है कि पुरुष सामान्य रूप से अपने हितों की अधिक परवाह करेंगे और उनका विवेक–विज्ञान–सह–नैतिक पैटर्न हमेशा इच्छाओं से भरा रहेगा। रॉय समाज में परस्पर विरोधी दावों और प्रतिदावों के प्रति लापरवाह हैं; निहित स्वार्थ जो उनके हितों के लिए उपयोगी योजना को छोड़कर पुनर्निर्माण की किसी अन्य

Scanned with CamScanner

तक्रसंगत योजना की अनुमति नहीं देंगे। इस प्रकार रॉय हमें वास्तविक समाज की नहीं बल्कि एक पूर्ण समाज की तस्वीर देता है जो सामंजस्यपूर्ण और समरूप है, क्योंकि ऐसे समाज में ही कल्पना की गई तर्कसंगत निर्माण संभव है।

इसके अलावा इसके द्वारा उत्पन्न परिणामों के आधार पर, रॉय के क्रांति के सिध्दांत के विनाशकारी परिणाम होंगे। राजनीति को नैतिक बनाने, उचित साधनों का उपयोग करने, शिक्षा, अनुनय और तर्क का अभ्यास करने की उनकी सनक, उनके संस्थागत परिवर्तन तब तक शुरुआती बिंदू नहीं होने चाहिए। जब तक कि पुरुष अच्छे नहीं हो जाते, यदि स्वीकार किए जाते हैं, तो इसका मतलब केवल पापियों को शासन करने के लिए जीवन का एक नया पट्टा देना होगा। आत्मनिरीक्षण में व्यस्त रॉय के संतों पर। यदि हिंसक क्रांति से बचा जाता है, तो रॉय मानव संसाधन और स्वतंत्रता के संदर्भ में जो कुछ भी सोचता है, उसके लिए समय के संदर्भ में भुगतान करना चाहता है। स्वतंत्रता, यह सच है, एक मूल्यवान मानव विरासत है। लेकिन रॉय जो भूल जाते हैं, वह यह है कि लोग सिध्दांत बनाने से बीमार हो जाते हैं। जब पुरुषों को स्वतंत्रता और गैर–स्वतंत्रता के बीच चयन करना होगा, तो वे निश्चित रूप से स्वतंत्रता को चुनेंगे। लेकिन, जैसा कि आज है, "यदि मनुष्य के पास आध्यत्मिक प्रचुरता के बीच शारीरिक भुखमरी के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है, या आध्यात्मिक गरीबी के बीच भौतिक अस्तित्व की आशा है, तो विशाल बहुमत जीवित रहेगा, फिर अकेले ही वह मुक्त हो सकता है। यदि पुरुषों को चुनना है तो वे अस्तिव को चुनेंगे न कि स्वतंत्रता को। वे रॉय और उनके आंदोलन को उनके लिए चुनने की अनुमति नहीं देंगे।

इसके अलावा रॉय आधनिक राज्य की सशस्त्र शक्ति के कारण एक हिंसक क्रांति, सामाजिक आक्षेप की धारणा और विद्रोही पध्दति की संभावना को खारिज करते है, और इसलिए रॉय शिक्षा की विधि का सुझाव देते हैं। रॉय यह अच्छी तरह जानते हैं कि आज विचारों प्रेस, पोस्टर, पैम्फलेट, रेडियो और टेलीविचन के माध्यम से दिमाग तक पहुँचते हैं। संचार और विचारों के प्रसार के सभी महत्वपूर्ण माध्यमों पर राज्य और निहित स्वार्थों का एकाधिकार है। और ये चाप शक्तिशाली साधन हैं। रॉय के पास "हथियारों" के लिए एक तर्क है, दूसरा "विचारों" के लिए है। यदि राज्य हथियारों में बहुत शक्तिशाली है तो वह प्रचार के मीडिया में भी कम साधन संपन्न नहीं है। और बदलने का हर प्रयास आशाहीन होता है। यदि एक हिंसक क्रांति अव्यावहारिक है, तो दार्शनिक क्रांति चांदनी है।

Scanned with CamScanner

संदर्भ

1. Karnik, V. B. M.N. Roy (New Delhi: National Book Trust, 1980.)
2. A biography of roy by one of his close associates. Pal, R. M. ed. Selections from the Marxian ¡y and the Humanist ¡y (Delhi: Ajanta Publications, 2000)
3. Ramendra M. N. Roy's New Humanism and Materalism (Patna: Buddhi¡di Foundations, 2001)
4. A critical study of Roy's new humanism and materialism sibnarayan, ed. M.N. Roy Philosopher-Revolutionary(New delhi: Ajanta Publications, 1995)
5. Tarkunde, v.m. radical humanism (new delhi : Ajanta Publications, 1983)
6. parikh, g.d. compiler. Essence of royism (Bombay: new jagriti samaj, 1987)
7. roy, m.n. materialism (Calcutta :renaissance publishers ltd, 1951)
8. roy, m.n. m.n. roy's memoirs (new delhi : Ajanta Publications1983)
9. roy, m.n. new humanism – a manifesto (new delhi : Ajanta Publications1981)
10. roy, m.n. new orientation (new delhi : Ajanta Publications1982)
11. roy, m:n.politics, power and parties (new delhi : Ajanta Publications1981)
12. roy, m.n. reason, romanticism and revolution (new delhi : Ajanta Publications1989)

❖

Scanned with CamScanner